विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 08-12-21

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पांडेय

संस्कृत में वचन, लिंग, संख्या और वाक्य विचार

संस्कृत वचन जिस शब्द से एक व्यक्ति या वस्तु का ज्ञान होता है। उसे एकवचन, जिससे दो व्यक्ति या वस्तु का ज्ञान होता है। उसे द्विवचन तथा जिससे दो से अधिक व्यक्ति या वस्तु का ज्ञान होता है। उसे बहुवचन कहते है। अपवाद स्वरूप कुछ शब्दों के वचन निश्चित होते हैं। जैसे- पुल्लिंग दार (पत्नी) अक्षत, लाज शब्द बहुवचन में ही प्रयोग किये जाते हैं। स्त्रीलिंग शब्द अप (जल) सुमनस् (फूल) वर्षा, सिकता (रत) शब्द सदा बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। एकवचनं त्वौत्सर्गिकं बहुवचनं चार्थबहुत्वापेक्ष्यम् नियम के अनुसार जहाँ वचन का निर्णय नहीं हो सके वहाँ एकवचन का ही प्रयोग करना चाहिए।संस्कृत में तीन वचन हो

1. एकवचन

2. द्विवचन

3. बहुवचन

एकवचन द्विवचन बहुवचन

बालकः बालकौ बालकाः

तौ बालकौ स्तः

ते बालकाः सन्ति।

स्त्रीलिंग- जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। (जैसे रमा, बालिका, सा आदि)

सा बालिका अस्ति।

ते बालिके स्तः।

ताः बालिकाःसन्ति।